लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय,

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण

कृष्णभक्ति काव्य धारा के प्रमुख कवि – सूरदास

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

1. **सूरदास →**

जन्म - 1478 ई. (1535 वि.)
जन्मस्थान - (i) डा. नगेन्द्र के अनुसार 'सीही' ग्राम में। (सारस्वत ब्राह्मण परिवार में)।
(ii) आधुनिक श्रोतों के अनुसार → 'रुनकता' ग्राम में।
मृत्युकाल → 1583 ई. (1640 वि.) (105 वर्ष)
मृत्युस्थान → 'पारसोली' ग्राम में
इनके गुरु का नाम - वल्लभाचार्य
गुरु से सर्वप्रथम भेंट/दीक्षा - 1509-10 ई. में (पारसोली में)

नोट:- सूरदास अपने आरम्भिक जीवन मथुरा के निकट गऊघाट (पारसोली) नामक स्थान पर रहते थे सर्वप्रथम इसी स्थान पर इनकी गुरु वल्लभाचार्य जी से भेंट हुई थी अपनी पहली मुलाकात के समय सूरदासजी ने गुरु वल्लभाचार्य जी को अनासक्ति भाव के निम्नलिखित दो पद सुनाये थे
(i) प्रभु हौं सब पतितन को टीको।
(ii) हौं हरि सब पतितन को नायक।

भक्तिपद्धति → सूरदासजी अपने आरम्भिक जीवन में दास्य एवं विनय भक्ति भावना पद्धति से अपने पद रचा करते थे परन्तु आगे चलकर गुरु वल्लभाचार्य जी कहने पर इन्होंने 'सख्य, वात्सल्य एवं माधुर्य' भक्ति भावना पद्धति को अपना लिया था।

प्रमुख रचनाएँ → 1. सूरसागर
2. सूरसारावली
3. साहित्य लहरी

नोट:- डा. दीनदयालु गुप्त के द्वारा सूरदासजी की कुल

रचनाओं की संख्या पच्चीस मानी गई है इन्होंने इनमें से निम्नलिखित सात रचनाओं का प्रकाशन भी करवाया है।

1. सूरसागर 2. सूरसारावली
3. साहित्यलहरी 4. सूर पच्चीसी
5. सूर साठी 6. सूर रामायण
7. राधारसकेली

→ रचनाओं के संदर्भ में विशेष तथ्य →

1. सूरसागर → यह सूरदासजी की सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है इस रचना का सर्वप्रथम प्रकाशन / सम्पादन 1934 ई. में नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के द्वारा करवाया गया था।

→ इस रचना का मूल उपजीव्य ग्रंथ श्रीमद्भागवतपुराण के दशम स्कन्ध के 46 वे व 47 वे अध्याय को माना जाता है।

→ श्रीमद्भागवत पुराण की तरह इस रचना को भी 12 स्कन्धों में विभाजित किया गया है।

→ इस रचना में सूरदासजी ने वात्सल्य रस का अत्यधिक सुन्दर वर्णन किया है इसको देखकर आचार्य शुक्ल ने एक जगह लिखा है।

"सूर अपनी आँखों से वात्सल्य का कोना-कोना छान आये हैं।

→ आचार्य शुक्ल के अनुसार सूरदासजी ने यह रचना अपने 67 वें जन्म वर्ष में लिखी थी।

(1478 + 67 = 1545 ई.)

→ डा. नगेन्द्र ने इस रचना को अन्योक्ति काव्य एवं उपालम्भ काव्य के नाम से भी पुकारा है।

2. सूरसारावली →

डा॰ नगेन्द्र के अनुसार यह सूरदासजी की सबसे विवादित या अप्रामाणिक रचना मानी जाती है।

3. साहित्यलहरी →

यह सूरदासजी द्वारा रचित रीति काव्य एवं लक्षणग्रंथ परक काव्य रचना मानी जाती है। इस रचना में सूरदासजी द्वारा रचित कृष्णबोध / रहस्यपूर्ण पदों का संकलन किया गया है।

→ अलंकार निरूपण की दृष्टि से यह हिन्दी साहित्य की महत्त्वपूर्ण रचना भी मानी गई है।

→ कवि के संदर्भ में अन्य विशेष तथ्य →

1. हिन्दी साहित्य जगत में सूरदास जी को वात्सल्य रस सम्राट ~~देवलोक~~ 'जीवनोत्सव का कवि'' 'खंजननयन' 'पुष्टिमार्ग का जहाज'' इत्यादि नामों से भी पुकारा जाता है।
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इनको वात्सल्य रस सम्राट एवं ~~देवलोक~~ जीवनोत्सव का कवि कहकर पुकारा था।
3. अमृतलाल नागर ने इनके जीवन पर 'खंजन-नयन' नामक एक उपन्यास लिखकर इनको 'खंजननयन' नाम प्रदान किया था।
4. गोस्वामी विट्ठलदास जी ने इनकी मृत्यु के समय इनको पुष्टि मार्ग का जहाज कहकर पुकारा था। यथा
"पुष्टिमार्ग को जिहाजजात है, जाको कछु लेना होय तो लेऊ।"
5. संस्कृत साहित्य जगत में महाकवि माघ को 'उपमा' 'अर्थगौरव' एवं 'पदलालित्य' इन तीन गुणों के लिए प्रसिद्ध माना गया है। यथा—

उपमा कालिदासस्य, भारवेर्थ गौरवम् ।
"दण्डिनः पदलालित्यं, माघे सन्ति त्रयो गुणाः ॥"

→ इसी कथन का अनुशरण करते हुये किसी समीक्षक ने सूरदास जी की प्रसंशा में निम्नलिखित पद लिखा है।

" उत्तम पद कवि गंग के, कविता को बल वीर ।
केशव अरथ गंभीर को, सूर तीन गुण धीर ॥"

→ अर्थात हिन्दी साहित्य जगत में सूरदास उत्तम पद रचना, उत्तम काव्यरचना एवं अर्थ गांभीर्य इन तीनो गुणों के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध माने जाते हैं।

→ " सूर सूर (सूर्य) तुलसी ससि (चन्द्रमा) उडुगन (तारा) केशवदास ।
और कवि खद्योत (जुगनूँ) सम जहँ तहँ करत प्रकास ॥"

अर्थात हिन्दी साहित्य जगत में सूरदासजी सूर्य के समान तुलसीदासजी चन्द्रमा के समान एवं केशवदासजी तारे के समान श्रेष्ठकवि माने गए हैं। इन तीनो के अलावा अन्य सभी कवि जुगनूँ के समान माने गए हैं जो कभी कभी अपना प्रकाश फैलाते हैं।

→ "सूरोच्छिष्टं जगत्सर्वम् "
(सूर + उच्छिष्टं (जूठन))

सूरदासजी ने अपनी रचनाओं में लगभग हर विषय एवं हर शब्द का प्रयोग कर दिया है इसके कारण इनके 'परवर्ती' कवियों को लिखने के लिए न तो कोई नया विषय प्राप्त हुआ एवं न ही कोई ~~शब्द~~ नया शब्द प्राप्त हुआ। इसीलिए कहा गया है कि यह सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य संसार सूरदास की जूठन का ~~भी~~ ही प्रयोग करता है।

→ सूरदासजी ने अपनी रचनाओं में 11 प्रकार की भक्ति

पद्धतियों / भगवद् आसक्तियों का विवेचन किया है।

→ पं० राधाकृष्णदास के अनुसार सूरदासजी 'भार' जाति के कवि भी माने गए हैं।

→ अबुलफ्जल द्वारा रचित आइन-ए-अकबरी रचना के अनुसार सूरदासजी को एवं इनके पिता रामदास को सम्राट अकबर का दरबारी कवि भी माना गया है।

→ हिन्दी साहित्य में भ्रमर गीत परम्परा का समावेश करने वाले कवि भी सूरदासजी ही माने जाते है।